# ढोढबेली गमनाय उर्फ अल्लाह मेघ दे!

धर्मेन्द्र पारे

अजरुद रैय्यत गाँव में त्यौहार मनाते लोग

बारिश के मज़े लेने के हम सबके अपने-अपने तरीके हैं। म.प्र के हरदा, खण्डवा क्षेत्र में रहने वाली कोरकू जनजाति का बारिश मनाने का अपना खास तरीका है। इस त्यौहार का नाम है ढोढबेली गमनाय। इस दिन गाँव के लड़के-लड़कियाँ मिलकर गाँव के ही किसी लड़के को जामुन के पत्तों से ढँक देते हैं। इसे गमनाय कहते हैं। पत्तों से ढँका या कहो बँधा यह लड़का मेंढक की तरह उछलता-कूदता चलता है। उसके साथ-साथ चलते गाँव के लड़के-लड़कियाँ घर-घर जाते हैं – नाचते-गाते। कासडा* परिवार की लड़की के सिर पर पटिया या टोकरी रखी जाती है। पटिए के ऊपर गोबर से बने कुछ मेंढक रखे जाते हैं। पटिए या टोकरी को आमतौर पर जामुन की पत्तियों से सजाया जाता है।

इस दिन गाँव के बच्चे-बूढ़े खुशी-खुशी होरोरिया नाच करते हैं। इस दिन हर घर में पूड़ी और जंगल के अचार की दाल बनाई जाती है। लड़के-लड़कियाँ घर-घर जाकर अनाज इकट्ठा करते हैं इससे अगले दिन गाँव के बाहर भोजन बनाते हैं। भोजन से पहले ढोढई माता और गमनाय को भोग लगाया जाता है। इसके बाद सब लोग भोजन करते हैं। भोजन करने के बाद कोई दूल्हा बनता है, कोई दुल्हन तो कोई दूल्हा-दुल्हन के माँ-बाप बनते हैं। इस तरह शादी का खेल खेलते हुए बच्चे घर आ जाते हैं।



घर लौटते समय आठ-दस साल के एक लड़के और एक लड़की के सिर पर एक बर्तन उल्टा रखा जाता है। इसमें गुड़ और पानी भरा होता है। इन दोनों को दूल्हा-दुल्हन माना जाता है। इस बर्तन को एक कपड़े से सात बार लपेटकर और उसमें गुड़ रखकर मुठवा देव के पास लाते हैं। फिर इस उल्टे बर्तन को उतारकर मादरा (एक पवित्र चिन्ह) पर रखा जाता है। बर्तन पर बँधा कपड़ा हटा लिया जाता है। घड़े में जिधर से पानी बहता है मानते हैं कि उसी दिशा से इस वर्ष बारिश होगी।

कोरकू जनजाति के लोग भीऊ (भीम) और अर्जुन की भी पूजा करते हैं। वे मानते हैं कि ये देव ही वर्षा कराते हैं। उनके पास एक ऐसी मकड़ी है जिसके कई पैर हैं। इस मकड़ी ने सारे आकाश पर अपना जाला बना रखा है। जब भगवान भीवला ऊपर से पानी गिराते हैं तब इस जाल के कारण ही वह बरसात की बूँद बन जाती है।

* कासडा का अर्थ मिट्टी-पानी होता है।